उ प सं हा र

अध्याय पहला :

इस मे लेखक का व्यक्तित्व तथा कृतित्व दिया गया है।

जैनेन्द्रकुमार का जन्म १९०५ में कौडियागंज में हुआ इनकी मुख्य देन कहानी तथा उपन्यास है। एक साहित्यिक विचारक के रूप में भी जैनेन्द्रकुमारजी का स्थान महत्वपूर्ण है। जैनेन्द्रजीकी प्रारंभिक शिक्षा हस्तिनापूर में गुरुकुल में हुई। मैट्रिक की परीक्षा प्राईवेट रूप से पंजाब में १९१९ में उत्तीर्ण की। आपकी उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हुई। १९२१ में उन्होने पढाई छोडकर कांग्रेस के असहयोग आंदोलन में भाग लिया। १९२१ से १९२३ के बीच माताके साथ व्यापार किया जिस में उन्हे सफलता भी मिली। इसके बाद उन्होने लेखन कार्य आरम्भ किया।

जैनेन्द्रजीने सन १९२८ में खेल, चोरी, फोटोग्राफी, आदि कहानियाँ लिखी जो सर्व प्रथम मानी जाती है। सन १९२९ में तीन कहानियों का प्रकाशन "फाँसी" नामसे हुआ। इसके बाद जैनेन्द्रकुमारजीकी कहानियों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके है। इनकी कहानियों की कुल संख्या १५५ से अधिक है और सब कहानियाँ "जैनेन्द्रकुमारकी कहानियाँ" शीर्षक से दस पृथक पृथक भागों में प्रकाशित हो चुकी है।

प्रथम भाग की कहानियाँ की रचना ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधारपर हुई है। इन कहानियों में स्वतंत्रतासे पूर्व भारतीय समाज

मुखारित हो उठा है।

दूसरे कहानी संग्रह की कहानियों की रचना बाल मनो विज्ञान के आधारपर हुई है। लेखकने बालकोंकी समस्याओंका उद्घाटन करते हुए उनके मन की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अन्तर्वृत्तियों को भी प्रस्तुत किया है।

तीसरे कहानी संग्रह में लोक-कथाओं की भाँति रोचक होने के साथ-साथ जीवन की सच्चाईयों पर प्रकाश डालती है ।

चौथे कहानी संग्रह में सामाजिक सम्बंधो पर प्रकाश डालते हुए स्त्री पुरुष की प्रेम और विवाह-सम्बन्धी समस्याओं का उद्घाटन किया है।

पाँचवे कहानी संग्रह में प्रेम का बौद्धिक और व्यापक दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। ये कहानियाँ हमारे जीवन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। तथा गहनतम सत्यो का उद्घाटन करती है।

छटे कहानी संग्रह की कहानियों में लेखकने व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होने के कारण जीवन की विविध समस्याओंको नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है।

सातवे कहानी संग्रहकी कहानियों में लेखकने पात्रों की मनोभावनाओं का चित्रण मनोवैज्ञानिक आधार पर किया है। इस संग्रह की कहानियों में प्रेम और विवाह सम्बन्धी समस्याओं से जुडी है।

इन कहानियों की विशिष्ठता पात्रों के चारित्रिक वैशिष्ट्य में निहित है।

आठवें कहानी संग्रह में वैविध्य की दृष्टिसे इस भाग की कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में घटना की प्रधानता होते हुए पात्रों के चरित्र का उद्घाटन और विश्लेषण सूक्ष्मता से हुआ है।

नववा भाग की कहानियों में नवीन शिल्प-विधियाँ द्वारा जीवन की समस्याओंका उद्घाटन करती है तथा उनका समाधान भी प्रस्तुत करती हैं।

दसवाँ भाग इस भाग की कहानियों में मानव के अन्तर्मन के रहस्यों का उद्घाटन मनोवैज्ञानिक शिल्प-पद्धतियों द्वारा हुआ है।

जैनेन्द्र की सर्व प्रथम औपन्यासिक कृति "परख" का प्रकाशन १९२९ में हुआ। जो मनोवैज्ञानिक होने के साथ-साथ विधवा विवाह की समस्या से सम्बन्ध रखती है। सन १९३५ में जैनेन्द्रजी के दूसरे उपन्यास "सुनीता" का प्रकाशन जो जैनेन्द्रजीकी सर्वश्रेष्ठ औपन्यासिक कृति कहा जा सकता है। जैनेन्द्रजी की तीसरी औपन्यासिक कृति "त्यागपत्र" है। इसका प्रकाशन सन १९३७ में हुआ। सन १९३९ में जैनेन्द्रकुमार के चौथे उपन्यास "कल्याणी" का प्रकाशन हुआ। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है।

पाँचवा उपन्यास "सुखदा" है जिसका प्रकाशन सन १९५३ ई. में हुआ। इसका कथानक घटनाओं के वैविध्य बोझसे आक्रान्त है।

जैनेन्द्रजीकी छठवी औपन्यासिक कृति "विवर्त" का प्रकाशन १९५३ में हुआ है इस उपन्यास के कथानक का केन्द्र जितेन - का चरित्र है। सातवाँ उपन्यास "व्यतित" हैं जो सन १९५३ में प्रकाशित हुआ था। आठवाँ उपन्यास "जयवर्धन" १९५६ में प्रकाशन हुआ है। इस उपन्यास के दस वर्ष पश्चात लिखा गया उपन्यास है "मुक्तिबोध" जिस में जैनेन्द्रजीने राजनीतिक और समाजिक बोध को उनके जीवन दर्शन को उजागर करता है।

जैनेन्द्रजीने कहानी, उपन्यासों के अतिरिक्त निबंध-साहित्य के विकास में भी योगदान दिया है।

<u>दूसरा अध्याय</u> :-

इस अध्याय में हिन्दी कहानी और जैनेन्द्रजी का सामान्य परिचय दिया गया है। हिन्दी कहानी का उद्‌भाव उन्नीसवी शताब्दी में हुआ। इस युग के पूर्व प्रेमचन्द युग कहा जा सकता है। इसमें परिणाम की दृष्टिसे बहुत कम कहानियाँ लिखी गई हैं।

भारतेन्दू के अविर्भाव के साथ-साथं अनेक लेखकोंने इस क्षेत्र में विभिन्न कृतिया प्रस्तुत की जिनका स्वरूप आधुनिक कहानी से साम्य रखता है। लेकिन यह कहानियाँ निबन्धात्मक तथा कथा तत्वोंसे युक्त हैं। इन कहानियों के साथ-साथ जासूसी तथा हास्य-व्यंग प्रधान कहानियाँ भी लिखी गयी।

इसके उपरान्त हिन्दी कहानी साहित्य में जयशंकर प्रसादजीनें

अपना योगदान दिया। छाया, आँधी, प्रतिध्वनी "इन्द्रजाल, आकाश दीप आदि उनके कहानी संग्रह है।

मुन्शी प्रेमचन्द हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार ही नहीं कहानीकार भी है। उन्होने तीन सौ के लगभग कहानियाँ लिखी हैं। इसमें सामाजिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक सभी प्रकार की कहानियाँ है। पण्डित चन्द्रधार शर्मा गुलेरी तथा विश्वम्भरनाथ शर्मा "कौशिक" सुदर्शन, पाण्डेय बेचन शर्मा "उग्र" आचार्य चतुरसेन शास्त्री आदि साहित्य कारोने विद्रोह राजनैतिक सामाजिक रूढि परम्पराओं को लेकर कहानियाँ लिखी। कहानी के माध्यमसे समाज के विकृत रूप का पर्दाफाश करने का प्रयत्न किया है। सभी साहित्यकारो की कहानियाँ एक जैसी लगती है। इसमें अलगपन कुछ नहीं है। लेकिन हिन्दी कहानी में अलगपन लाने का प्रयत्न जैनेन्द्रजीने किया है। जैनेन्द्रजी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों में से हैं। शिल्प और भाव दोनो दृष्टियों से उनकी कहानियाँ उत्कृष्ट हैं। जैनेन्द्रजीने अधिकतर पारिवारीक जीवनकोही अपनी कहानियोंका विषय बनाया है।

सम्पूर्ण हिन्दी कहानी "साहित्य में जैनेन्द्रजी ही सर्व प्रथम ऐसे मनो वैज्ञानिक कहानीकार हैं जिन्होने अपनी अद्भुत चिंतन-शक्ति एवं विचार-प्रवाह शैली द्वारा हिन्दी कहानी साहित्य को नया मोड दिया है। उन्होने कहानियों में समष्टि की अपेक्षा व्यष्टि को प्रधानता दी है और व्यक्ति के अचेतन जगत् में निवास करनेवाली विभिन्न गुत्थियों अथवा ग्रंथियो को नये मनोवैज्ञानिक ढंग से उजागर करने का प्रयत्न किया है।

इस कारण हिन्दी कहानी हिन्दी कहानी साहित्य में जैनेन्द्रजीका अलग पन दिखाई देता है।

तीसरा अध्याय :-

इस अध्याय में जैनेन्द्रजी के कहानियों के विभिन्न नारी रूपों को प्रस्तुत किया है। जैनेन्द्रजी की कहानियाँ अनेक प्रकार की हैं परन्तु उनमें नारी केन्द्रबिंदू है। कहानी के अन्य पात्र उसके ईर्द-गिर्द घुमते रहते हैं। कहानी की नारी एक ही भूमिका निभाती नहीं हैं वह अलग अलग रूपमें प्रस्तुत होती है। कभी वह माँ, कभी पत्नी, कभी प्रेयसी, सखी, बहन, भाभी, मामी, दादी आदि रूपोंमे पाठकों के सामने प्रस्तुत होती है। इस अध्याय में नारी के विविध रूपों को बताने का प्रयत्न किया गया है।

चौथा अध्याय :-

जैनेन्द्रजी की कहानियों की नायिकाओं के सामने अनेक समस्याएँ हैं। जो उपरीतौर पर कुछ समझाता नहीं परंतु जैसे जैसे पात्रों की ओर बढने पर उनके मन की गुत्थीयाँ उलझाने लगती हैं। जैनेन्द्रजीकी कहानियों में नारी की अनेक समस्याएँ है जो चौथे अध्याय में दर्शाया गया है।

पाँचवा अध्याय :-

पाचवे अध्याय में जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों के नारी पात्रों की विशेषताओं को बताया गया है। कहानीकी नायिकाएँ

मध्यम वर्गिय होते हुए भी अहंवादी है। किसी भी समस्याओं से वह घबराती नहीं तो वह डटकर सामना करती है। अपने निजी जीवन के बारे में वह समाज से डरती नहीं है। समाज क्या कहेगा ? और क्या करेगा ? इस बातकी उसे पर्वा नहीं है। हर समय मुसिबतों से सामना करते-करते वह स्वयं मिट जाती है परंतु हारती नहीं और अपने परिवार को संतुष्ठ रखने का प्रयत्न करती है। नारी की विशेषताओं को प्रस्तुत अध्याय में दर्शाया हैं।

इस प्रकार विषय का विचार करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे वे इस प्रकार है :-

१] शिल्प की दृष्टि से हिन्दी कहानी-साहित्य को नया मोड देने में जैनेन्द्रजीका स्थान महत्त्वपूर्ण है।

२] जैनेन्द्रजीने अपने कहानियों में समाज की अपेक्षा व्यक्ति का प्रधानता दी है।

३] कहानियों में अलग-अलग नूतन शिल्पविधियों का प्रयोग कर उन्होने व्यक्ति के अन्तर्मन के रहस्यपूर्ण अंश को बाहर निकलवाने का प्रयास किया है।

४] जैनेन्द्रजी की कहानियों में नारी के जितने भी रूप है वह कहानी के पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

५] नारी की सभी समस्याओं कों का चित्रण कहानी के माध्यमसे दर्शाया है।

६] कहानी में चित्रित नायिकाएँ अहंवादी मध्यम वर्ग की तथा शिक्षित नहीं है, वह समाज से डरती नहीं हैं , और उसके नियमों का पालन भी नहीं करती।

७] कहानी सभी नायिका समस्याओंसे पलायन नहीं करती उसका सामना करती है।

८] कहानी केके नारी पात्र पारिवारिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थितिसे असन्तुष्ट रहते है इसलिए निरन्तर अन्तर्द्वन्द्व के कारण उनकी मन:स्थिति कुण्ठित हो जाती है।

९] विवाहोपरान्त भी पति को धोखा देकर प्रेमी के पास भाग जाने की प्रवृत्ति रहती है अथवा पति के पास रहते हुए भी प्रेमी से प्रेम करती रहती है।

१०] जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियाँ को नायिका परिस्थितिवश वे पापपूर्ण कृत्योंको करने के लिए भी बाध्य हो जाती है।